हिन्दी अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी : संभावनाएं और सीमाएं

डॉ. देवेन्द्र कुमार

ख़ालसा कॉलेज, गढ़दीवाला
होशियारपुर, पंजाब।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण आज सम्पूर्ण विश्व एक ग्राम बन गया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने सम्पूर्ण विश्व में एक छोटे से यंत्र में समेट दिया है। इसके बढ़ते प्रभाव से संसार का कोई भी क्षेत्र कोई भी कार्य अछूता नहीं रह गया है। वस्तुतः सूचना प्रौद्योगिकी ने सर्वाधिक लाभ अर्थव्यवस्था को पहुँचाया है तथापि ज्ञान–विज्ञान का कोई भी विषय और क्षेत्र इसके प्रभाव से अप्रभावित नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी ने जहां विज्ञान के विषयों को नई संभावनाएं प्रदान की हैं वहां मानविकी विषयों को भी न्यूनाधिक प्रभावित किया है। क्या अर्थविज्ञान, क्या राजनीति विज्ञान, क्या समाजशास्त्र और क्या भाषा और मानविकी, सभी ज्ञानानुशासन सूचना–प्रौद्योगिकी से न्यूनाधिक लाभान्वित हुए हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में भी सूचना–प्रौद्योगिकी ने अनुसंधित्सुओं को असीम संभावनाएं और सफलताएं प्रदान की हैं। एक क्लिक पर ढेर–सी जानकारियां हमारे सामने उपस्थित हो जाती हैं और हम संदर्भ, प्रसंग तथा आवश्यकता के अनुसार उसका लाभ उठाते हैं। विभिन्न ज्ञानानुशासनों में हो रहे शोध कार्य में तो सूचना–प्रौद्योगिकी ने निस्सन्देह नए क्षितिज खोले ही हैं, हिन्दी अनुसंधान भी इससे अछूता नहीं रहा है। यद्यपि आज इसका प्रयोग और प्रचलन कम है तथापि यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि भविष्य में संभावनाएं बेशुमार हैं। हिन्दी अनुसंधान में सूचना–प्रौद्योगिकी के प्रयोग और संभावनाओं पर चर्चा करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि हिन्दी अनुसंधान और सूचना–प्रौद्योगिकी के सामान्य और अवधारक अर्थ क्या हैं? इनका प्रयोग किन अर्थों में किया जाता है।

डॉ. जोगेश कौर के अनुसार, "जिज्ञासा की तृप्ति और समस्याओं के समाधान के लिए मानव–मात्र में शोध की सहज–वृत्ति उपलब्ध है। यही शोध–वृत्ति जब सुनियोजित और अनुशासित होकर क्रियाशील बनती है तब ज्ञान के विविध क्षेत्रों में नए तथ्यों का नया आविष्कार होता है। इसके द्वारा मानव का प्रगति रूप तो प्रशस्तर होता ही है, सभ्यता और संस्कृति का स्वरूप भी अधिक निखरता है।"[1] स्पष्ट है कि शोध अथवा अनुसंधान मानव की जिज्ञासाओं की तृप्ति के समाधान की सहज प्रवृति है और यह मानव को उन्नत करती हुई सभ्यता/संस्कृति के स्वरूप को भी निखारती है। वस्तुतः अनुसंधान कार्य अज्ञात–कार्य को ज्ञात बनाने के साथ–साथ ज्ञात कार्य को पुनर्विवेचित करके स्पष्ट बनाने और व्यवस्थित

Scanned with CamScanner

करने की कला है। अनुसंधान भी एक कला है जिसके अन्तर्गत ज्ञान के ज्ञात–अज्ञात तथ्यों की खोज और उनका विश्लेषण करके सिद्धान्तों का निर्धारण किया जाता है।

अनुसंधान शब्द की व्युत्पत्ति 'धा' धातु के साथ 'अनु' तथा 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'ल्युट' (अन्) प्रत्यय से हुई है। 'धा' का अर्थ है रखना, धारण करना या स्थिर करना। इस प्रकार इसका लाक्षणिक अर्थ निकलता है–किसी वस्तु अथवा विषय पर दृष्टि रखना अथवा दृष्टि केन्द्रित करना। ''अनुसंधान शब्द का विश्लेषण 'अनु–संधान' के योग की प्रक्रिया द्वारा भी किया जा सकता है। संधान का अर्थ है–लक्ष्य निर्धारित करना, निशाना लगाना, शोध के क्षेत्र में अप्राप्त परन्तु अस्तित्ववान् तथ्यों का पुनः नवीन दृष्टि से विश्लेषण करके सर्वग्राह्य निष्कर्षों की स्थापना करना अनुसंधान कहलाता है।''[2]

अनुसंधान शब्द के कई पर्याय हिन्दी में उपलब्ध हैं यथा–शोध, अन्वेषण, गवेषणा, अनुशीलन, परिशीलन, अन्वीक्षण, समीक्षा आदि। शोध शब्द अनुसंधान के अत्यंत निकट और स्थापनापन्न माना जाता है। शोध शब्द की व्युत्पति 'शुध' धातु से हुई है जिसका अर्थ है शुद्ध करना, बनाना, रूप देना, त्रुटियों को दूर करना आदि।

डॉ. तिलक सिंह के अनुसार, ''अनुसंधान के क्षेत्र में अज्ञात तथा विस्मृत तथ्यों को सर्वग्राह्य बनाना और ज्ञात तथ्यों को नवीन दृष्टि से संदेहरहित तथा निर्भ्रान्त बनाना शोध कहलाता है।''[3]

इस प्रकार शोध अथवा अनुसंधान से तात्पर्य है–अज्ञात को ज्ञात बनाना और उसे उसकी वास्तविकताओं सहित विश्लेषित करके नएपन के साथ पुनः प्रस्तुत करना ताकि सामाजिक को उसके प्रति कोई संदेह न रहे।

अनुसंधान के अर्थ से भिन्न होकर अब सूचना–प्रौद्योगिकी के अर्थ को जानना भी अपेक्षित है। सूचना–प्रौद्योगिकी के लिए अंग्रेजी में Information Technology शब्द चलता है जो Information तथा Technology शब्दों से निर्मित है। विकिपीडिया पर इसका अर्थ इस प्रकार दिया गया है–''आंकड़ों की प्राप्ति, सूचना (इंफार्मेशन) संग्रह, सुरक्षा, परिवर्तन, आदान–प्रदान, अध्ययन डिजाइन आदि कार्यों तथा इन कार्यों के निष्पादन के लिए आवश्यक कंप्यूटर हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर अनुप्रयोगों से संबंधित है। सूचना–प्रौद्यगिकी कंप्यूटर पर आधारित सूचना–प्रणाली का आधार है।''[4] आजकल इसको सूचना एवं संचार–प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology, ICT) भी कहा जाता है। यह एक नया और उभरता हुआ क्षेत्र है और अत्यंत उपयोगी भी है।

वस्तुतः सूचना–प्रौद्योगिकी ने सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव बना दिया है। एक कुंजी भर दबाने पर वांछित जानकारी उपलब्ध हो रही है। सूचना क्रांति से समाज के सम्पूर्ण कार्यकलाप प्रभावित हुए हैं –वह धर्म हो या शिक्षा, स्वास्थ्य हो, व्यापार हो, प्रशासन, सरकार हो अथवा उद्योग, संगठन, अनुसंधान हो अथवा प्रचार–प्रसार सभी क्षेत्रों में काया पलट हो चुका है। आज का समाज–सूचना समाज कहलाने लगा है और यह सब कुछ सूचना–प्रौद्योगिकी के कारण हो पाया है।

Scanned with CamScanner

सूचना–प्रौद्योगिकी के अर्थ को स्पष्ट करते श्री एन. सी. पंत लिखते हैं–"यद्यपि सूचना की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। सूचना शब्द कई तरह के समाचारों के आदान–प्रदान के लिए प्रयोग में आता है। सूचना का वास्तविक सम्बन्ध ज्ञान के किसी स्रोत को किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाना है जिसे उस ज्ञान की जानकारी पहले न रही हो। किसी घटना–विशेष की सम्पूर्ण या आंशिक जानकारी किसी व्यक्ति या समाज या पूरे मानवीय समाज को देना सूचना कहलाता है।"[5]

इस प्रकार सूचना–प्रौद्योगिकी आज के युग की शक्ति है। जिन देशों के पास समुन्नत सूचना प्रौद्योगिकी है, वे अधिक विकसित तथा समृद्ध है और इससे वंचित अथवा अल्पविकसित सूचना प्रौद्योगिकी वाले देश अभी भी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं।

हिन्दी अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी–

हिन्दी अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी के अर्थ विश्लेषण के उपरांत अब हमें यह देखना है कि दोनों का परस्पर सम्बन्ध कैसा है और सूचना–प्रौद्योगिकी हिन्दी अनुसंधान की दिशा में कहां तक सहायक है और हिन्दी शोधार्थियों को कितना लाभान्वित कर सकती है और कर रही है।

वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित दिशा–निर्देशों और जटिल गुणवत्ता सूचकांकों के कारण हर क्षेत्र में अनुसंधान और शोध–पत्रों ने गति पकड़ी है। प्रत्येक व्यक्ति आज अनुसंधित्सु बन रहा है। एक ओर जहां इस अनिवार्यता ने शोध–पत्रों और शोध–विषयों में वृद्धि की है वहीं पिष्ट–पेषण भी असीम गति से बढ़ा है। फिर भी आज इस ओर अत्यधिक ध्यान दिया जा रहा है, शोध–क्षेत्र में आशातीत वृद्धि ने शोध में अनेकानेक अन्य अनुशासनों और तकनीकी के प्रयोग की संभावनाओं को भी बढ़ा दिया है अतः "प्रत्येक शैक्षिक अनुशासनों में निरंतर शोध एवं अनुसंधान से नए–नए ज्ञान के अभ्युदय की होड़ लगी है। इससे शिक्षा के प्रत्येक विषय अपने को विकसित करने के लिए अन्य शैक्षिक अनुशासनों का भी आश्रय ले रहे हैं। फलतः अन्तरानुशासनात्मक शोध को महत्त्व मिल रहा है और नवीन सूचनाओं के प्रसंस्करण (प्रौसेसिंग) से सर्वथा अद्यतन, उपयुक्त एवं प्रासंगिक ज्ञान को अन्वेषित करने का प्रयत्न हो रहा है। स्वाभाविक है कि वर्तमान परिस्थिति में हिन्दी भाषा एवं साहित्य भी इसका लाभ उठाकर विविध अनुसंधात्मक परिप्रेक्ष्य में खड़ी चुनौतियों को अन्वेषित करते हुए अपने शोध अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करे।"[6]

हम इस बात से भी कतई इंकार नहीं कर सकते कि भारतीय समाज में दी जाने वाली उच्च शिक्षा (जिसमें अनुसंधान भी शामिल है) में अनेकानेक खामियां हैं। हालांकि किसी भी समाज के आधारभूत ढांचे (शैक्षणिक) की यह प्राथमिक कसौटी होती है और प्रगतिशील समाज के लिए इसका महत्त्व अक्षुण्ण होता है। शोध–संचयन के सम्पादक सम्पादकीय टिप्पणी में इस सम्बन्ध में लिखते हैं–"भारतीय समाज में दी जाने वाली उच्च शिक्षा में तमाम प्रकार की पारस्परिक खामियां रही हैं। इनमें अच्छे ढंग से नियमित रूप से

Scanned with CamScanner

शोध कार्य का न होना एक आधारभूत खामी रही है। विज्ञान के कुछ विषयों को छोड़ दिया जाए तो अधिकतर दूसरे विषयों में विभिन्न विश्वविद्यालयों में नियमित तौर पर शोध करने की कोई पुष्ट अनिवार्य परम्परा नहीं रही है। इसका दुष्परिणाम यह रहा कि कई विषयों के महत्व को ही सन्देह की नजर से देखा जाने लगा। यद्यपि वे कभी भी कम महत्व के विषय नहीं रहे। आखिरकार विभिन्न विषयों के समय के साथ शोध के माध्यम से नए तथ्यों के शामिल न किये जाने पर उसकी प्रासंगिकता व उपादेयता का सन्देहपूर्ण होना बिल्कुल स्वाभाविक ही है। भारत जैसे देश के राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, भाषा सहित कला व मानविकी के तमाम अन्य विषय क्षेत्र में शोध के महत्व व आवश्यकता से कौन इंकार कर सकता है।.....एक प्रगतिशील समाज के लिए तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।''[7]

भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा की बात करें तो निराशा होती है। उच्च शिक्षा में बेहद निरर्थक और अर्थहीन बातों को शामिल केवल इसलिए किया जाता रहा है क्योंकि स्वयं हमारा ज्ञान सुव्यवस्थित तथा पर्याप्त नहीं रहा है। इससे उच्च शिक्षा (अनुसंधान भी) अर्थहीन और दिशाहीन होती चली गई। हालांकि आज भी स्थिति अधिक सन्तोषजनक नहीं है।

हिन्दी में शोध की स्थिति अत्यंत शोचनीय है। पृष्ठ–प्रेषण और एक ही विषय पर अनेकानेक शोधग्रंथ लिखा जाना और केवल सोपाधी शोध को दृष्टिगत रखना अत्यंत कष्ट दायक है। निरुपाधी शोध करने वालों का नितांत अभाव हिन्दी अनुसंधान के लिए अभिशाप ही रहा है। एक ओर आधारभूत सामग्री की अनुपलब्धता और दूसरी ओर जीवन में जोखिम उठाने के प्रति उदासीनता ने हिन्दी अनुसंधान को सदैव हाशिए पर रखा। ऐसा भी नहीं है कि प्रयास हुए नहीं है, अवश्य हुए हैं और उत्तम स्तर के हुए हैं, परन्तु ये प्रयास परिमाण में काफी कम हैं। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में हिन्दी अनुसंधान की दिशा एवं दशा के विषय में डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह लिखते हैं–''आचार्य रामचन्द्र के पूर्व हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के समय हिन्दी की आधारभूत सामग्री कितनी सीमित थी यह किसी से छिपा नहीं है। उस समय कुछ खोज, रिपोर्ट या विद्वानों के व्यक्तिगत प्रयत्नों की फलश्रुति के अतिरिक्त कुछ भी शोध सन्दर्भ उपलब्ध नहीं था। किन्तु आचार्य शुक्ल और शुक्लोत्तर युग के इतिहास लेखन की परम्परा के सूत्रपात् और अन्य कारणों से कतिपय शिक्षक–आलोचकों के श्रमसाध्य अनुसंधान से साहित्य का अकादमिक क्षेत्र समृद्ध हुआ है। पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिन्दी के रचनात्मक संसार का असीमित विस्तार कर दिया है। केवल सौ वर्षों के इतिहास में भाषा–साहित्य के अनुसंधान में प्रचुर प्रगति हुई है।''[8] सचमुच कभी उँगलियों पर गिना जाने वाला साहित्य आज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और इसका श्रेय संचार क्रांति को जाता है।

संचार माध्यमों के विकास और प्रचार–प्रसार ने जहां अन्य क्षेत्रों में काफी सहायता पहुँचाई है वहीं अनुसंधान के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिए हैं। इलेक्ट्रॉनिक स्रोत की उपस्थिति ने तो शोध की सन्दर्भ सामग्री और प्रविधि में व्यापक परिवर्तन कर दिया है। साहित्य शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में अंकीय (डिजिटल) शब्दों और सन्दर्भ को शोध में कैसे लिया जाए और उस पर कितना विश्वास किया जाए। आज

Scanned with CamScanner

साहित्य क्षेत्र के लिए यह जानना भी आवश्यक हो गया है। इलेक्ट्रॉनिक स्रोतों ने जहां साहित्य–अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधित्सुओं का मार्गदर्शन किया है वहीं उनके लिए भ्रम की स्थिति भी उपस्थिति कर दी है। आज सन्दर्भ उपयोग के लिए ऑनलाइन पुस्तकालय और ऑनलाइन पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध हैं और नवीन संभावनाएं जगा रही हैं। इन संभावनाओं ने साहित्य–अनुसंधान के समक्ष नवीन संभावना एवं चुनौतियां भी पैदा कर दी हैं।

बढ़ रहे इलेक्ट्रॉनिक स्रोतों ने सम्प्रति अनुसंधान के क्षेत्र में अन्तरानुशासनात्मक शोध के वातावरण में विविध नए विषयों की संभावनाओं पर बल दिया है। अन्य भाषाओं और विषयों का अनूदित रूप हमारे पास उपलब्ध होने के कारण हिन्दी अनुसंधान के लिए नए फलक, नए विषय, नए अन्तरानुशासन, नए शिल्प आदि सुलभ हो गए है। वैश्वीकरण और सूचना क्रांति ने जहां बहुत कुछ संभावनाएं पेश की है, वहीं इनके दबाव में जटिल हो रही संवेदना से विषय का सरलीकृत रूप भी असामान्य हो गया है। अतः साहित्य अनुसंधान और भी जटिल और चुनौतीपूर्ण हो गया है।

आज हमें शोध के दुनिया में लकीर का फकीर बनने की न तो आवश्यकता है और न ही विवशता क्योंकि सूचना के बढ़ते साम्राज्य ने उपयोगी और प्रासंगिक सूचनाओं का पृथक्करण करते हुए इनकी प्रोसेसिंग से नए ज्ञान या तथ्यों को उद्घाटित करने वाले अनुसंधान के महत्व को अत्यंत विकसित किया है। इस सम्बन्ध में डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह लिखते हैं–''अपने शोध को सर्वथा वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक तथा प्रासंगिक और उपयुक्त बनाने के लिए शोध की प्रक्रिया और नवीन विषयों पर विचार करना नितांत आवश्यक है। साहित्यिक विमर्श, प्रवृत्त्यात्मक अध्ययन, शिल्पगत अध्ययन, नयी भाषिक प्रवृत्तियों के अन्वेषण साहित्य के समाजशास्त्रीय, समाजभाषिकी, पाठालोचन, शैली वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन के विविध परिप्रेक्ष्य में नवीन संभावनाओं को अन्वेषित करने की नितांत आवश्यकता है।''[9] आज इंटरनेट के प्रयोग से अनुसंधित्सु के समक्ष कुंजीपटल के एक दबाव से सूचनाओं का अपार भण्डार खुलने लगता है और लिंक पर लिंक मिलते चले जाते हैं और आवश्यकतानुसार जानकारी उपलब्ध होती जाती है परन्तु यह जानकारी कितनी उपयोगी और प्रामाणिक है, इस पर प्रश्न चिह्न है और अनुसंधित्सु के विवेक पर आधारित है।

यह सत्य है कि आज संचार क्रांति के युग में संगणक और इंटरनेट ने नवीन संभावनाओं को जन्म दिया है और आने वाले समय में और भी सुधार उपस्थित होंगे किन्तु वर्तमान समय तक हिन्दी अनुसंधान में अधिक संभावनाएं दृष्टिगोचर नहीं हो रही हैं और जो कुछ उपलब्ध है वह अनुसंधान के लिए अधिक उपयोगी नहीं है। इंटरनेट पर किसी कवि विशेष की सामान्य जानकारी तो अवश्य मिल जाएगी परन्तु यदि इस कवि विशेष पर हुए निरंतर और सामयिक कार्य और आलोचनाएं आज भी उपलब्ध नहीं है। रामचरितमानस पर आज तक सबसे ज्यादा शोध कार्य हुए हैं परन्तु ये सभी शोध कार्य अभी भी इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है ताकि नए अनुसंधित्सुओं को चुनाव किए जाने वाले विषयों के विषय में कोई नवीन जानकारी मिल सके। इंटरनेट के प्रयोग की एक समस्या यह भी है कि जो लिंक आज उपलब्ध हो रहा है संभवत वह कुछ दिन पूर्व नहीं था और कुछ दिन पश्चात् भी नहीं

Scanned with CamScanner

रहेगा। ऐसे में प्रामाणिकता संदेहास्पद हो जाती है। भ्रम की स्थिति बनने पर अनुसंधान पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। हिन्दी में कई प्रकार के कुंजीपटल और अनेकानेक हिन्दी फोण्ट उपलब्ध होने के कारण भी भ्रांति उत्पन्न होती है। अतः हिन्दी अनुसंधान में अभी क्रांति आना बाकी है। हमें बहुत कुछ करना होगा। ''हिन्दी शोध के प्रारूप में एकरूपता लाने के लिए और वैश्विक आधार पर हिन्दी के शोधों को प्रतिष्ठित करने के लिए शोध लेखन के मानक प्रारूप को निश्चित करना होगा। मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन ऑफ अमेरिका (MLA) के हैण्डबुक या शिकागो विश्वविद्यालय के 'शिकागो मैनुअल ऑफ स्टाइल' की तरह हिन्दी के शोधविदों को या शोध संस्थाओं की परस्पर सम्मति से शोध–लेखन के प्रारूप को मानकीकृत करने की जरूरत है। शोध की गुणवत्ता को सुधारने और पुनरावृति से बचने के लिए आज आवश्यकता है कि हिन्दी भाषा और साहित्य के सभी प्रकाशित सन्दर्भ ग्रंथों की ओर रचनाओं की विशाल सूची बने और अध्ययनकर्ता को आवश्यकता पडने पर उपलब्ध हो सके।''[10]

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी अनुसंधान के क्षेत्र में सूचना–प्रौद्योगिकी ने अत्यंत महत्वपूर्ण पहल करके कई संभावनाएं जगाई हैं और आने वाले समय में इस विषय में और भी उपलब्धियां हासिल होंगी परन्तु वर्तमान समय तक सूचना–प्रौद्योगिकी हिन्दी अनुसंधान में उतनी ही सहायता प्रदान कर पा रही है जितनी सहायता स्नातक का एक छात्र स्नातकोत्तर अथवा सोपाधी शोध के छात्र को दे सकता है। हमें सूचना क्रांति के क्षेत्र में हिन्दी अनुसंधान हेतु यदि पूर्णतः विकसित और उपादेय तकनीकी दरकार है तो हम हिन्दी वाले को आगे आना होगा और हिन्दी की प्रत्येक रचना, प्रत्येक पुस्तक, प्रत्येक शोध प्रबन्ध को इंटरनेट पर डालना होगा ताकि हिन्दी अनुसंधान करने वालों को नवीन क्रांति से फायदा हो सके और पिष्ट–पेषण से मुक्ति मिल सके। आज हम विषय के चुनाव में ही कितना समय बर्बाद कर देते हैं और फिर अपनी सुविधा के लिए ऐसे विषय को चुन लेते हैं जिन पर ढेरों कार्य हो चुके हैं। यदि सभी विश्वविद्यालयों में हुए अथवा हो रहे हिन्दी अनुसंधानों की सूची और शोध–प्रबन्ध अपलोड कर दिए जाएं तो भ्रांतियां और पुनरावृति पर लगाम संभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. जोगेश कौर, डॉ. हरीश अरोड़ा, शोध : निकष पर, रेखा प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2004, प्राक्कथन.
2. वही–पृष्ठ 12.
3. उद्धृत–वही–पृष्ठ 11.
4- http://hi.wikipedia.org./5/kdy
5. उद्धृत, डॉ. हरमोहन लाल सूद, डॉ. देवेन्द्र कुमार, पत्रकारिता : पहचान और प्रशिक्षण, वागीश प्रकाशन, जालंधर, संस्करण 2005, पृष्ठ 201–202.
6. डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, साहित्य शोध के विविध परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां, शोध–संचयन (ऑन–लाइन अर्द्धवार्षिक पत्रिका), जनवरी 2010.

Scanned with CamScanner

7. शोध के प्रति जागरूकता व लगाम जरूरी–सम्पादकीय, शोध–संचयन, जनवरी 2014.
8. डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, साहित्य शोध के विविध परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां, शोध संचयन, जनवरी 2010.
9. वही–पृष्ठ 2.
10. वही–पृष्ठ 2.

Scanned with CamScanner